International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.3 No.4 Sept – Oct 2022

द्वितीय विश्व युद्ध (झारखंड राजनीति के संदर्भ में) : जयपाल सिंह मुंडा की भूमिका

स्मिता तिग्गा

शोधार्थी "इतिहास विभाग" राँची विश्वविद्यालय, राँची इतिहास संकलन समिति झारखण्ड
Corresponding Author- **स्मिता तिग्गा**
Email id: smitatigga26@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7302329

भारतीय राष्ट्रवाद ने ३ सितंबर १९३९ ई० को द्वितीय विश्व युद्ध के प्रकोप के साथ, एक नया मोड़ लिया जो हमारे देश के भाग्य का फैसला करना था। झारखंड भी 'द्वितीय विश्व युद्ध' की जलते लोह से आछुता नहीं था। वर्ष १९३९ ई० झारखंड की राजनीति में विभिन्न महत्वपूर्ण घटनाओं के साथ चिह्नित किया गया था। १९३९ ई० की शुरुआत में, जयपाल सिंह मुंडा ने आदिवासी नेताओं के अनुरोध को जो २० जनवरी, १९३९ ई० को होने वाली आदिवासी महासभा की बैठक की अध्यक्षता करने के लिए स्वीकार कर लिया। उस समय झारखंड के इतिहास का एक स्वर्णिम अविस्मरणीय पृष्ठ था, क्योंकि इसी दिन झारखंड की अस्मिता, अस्तित्व और पहचान की व्यवहारिक अभिव्यक्त की शुरुआत हुई थी।[१] एक उच्च शिक्षित ईसाई के रूप में उनकी प्रसिद्धि आदिवासी, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में शिक्षित होने के बाद, एम्स्टर्डम ओलंपिक में स्वर्ण पदक विजेता 'हॉकी टीम' के कप्तान के रूप में, बीकानेर राज्य के वित्त मंत्री और बर्मा शेल कंपनी के महाप्रबंधक के रूप में थे। आदिवासी महासभा में शामिल होने से पहले ही उनका लगाओ यहां के आदिवासी जनता से हो चुके थे। झारखंड के राजनीति बैठक में जयपाल सिंह को महासभा का अध्यक्ष चुना गया। उनके सक्षम नेतृत्व में आदिवासी महासभा जल्द ही झारखंड में रहने वाले आदिवासी लोगों के एक बड़े वर्ग का प्रतिनिधि राजनीतिक संगठन बन गई।

मई १९३९ ई० में जिला बोर्ड के चुनाव हुए। जिसमे आदिवासी महासभा ने सिंहभूम जिले की २७ सीटों में से २२ और रांची जिले की २७ सीटों में से १६ सीटों पर कब्जा कर लिया।[२] भारत के लोगों की और पूरी तरह से भारतीय राय की अवहेलना थी। इससे भारतीय नेताओं में भारी रोष हुए। यह क्षेत्र अंग्रेजों द्वारा केवल युद्ध में उपयोग के लिए भारत के संसाधनों का दोहन करने के लिए किया गया था। भारतीय नेताओं ने अपनी राय व्यक्त की कि भारत ब्रिटेन के साम्राज्यवादी मंसूबों का पक्ष नहीं हो सकता। वर्धा में ८ सितंबर से १५ सितंबर १९३९ ई० तक कांग्रेस कार्यसमिति की एक बैठक हुई। इस बैठक में यह निर्णय लिया गया कि "भारत के लिए शांति और युद्ध का मुद्दा भारतीय जनतो द्वारा तय किया जाना चाहिए और कोई बाहरी प्राधिकरण इसे लागू नहीं कर सकता है। लेकिन उन पर निर्णय, और न ही भारतीय लोग अपने संसाधनों को साम्राज्यवादी उद्देश्यों के लिए उपयोग करने की अनुमति दे सकते हैं। उनका यह भी मत था कि भारत को पहले एक स्वतंत्र राष्ट्र घोषित किया जाना चाहिए और सरकार को उनके युद्ध के उद्देश्य और शांति के उद्देश्य बताए जाने चाहिए।[३]

भारत की वैध राष्ट्रीय मांगों के संबंध में अंग्रेज सरकार की घोषणाएं इतनी निराशाजनक थीं कि अंग्रेज सरकार के साथ असहयोग दर्ज करने के लिए, कांग्रेस मंत्रालय ने इस्तीफा देने का निर्णय किया। छोटानागपुर और संथाल परगना के आदिवासियों के लिए प्रस्तावित सुधारात्मक उपायों को पीछे छोड़ते

हुए बिहार मंत्रालय ने ३१ अक्टूबर १९३९ ई० को अपना इस्तीफा दे दिया।[४] कांग्रेस ने ब्रिटिश सरकार के युद्ध प्रयासों का विरोध किया जबकि आदिवासी महासभा के अध्यक्ष जयपाल सिंह मुंडा ब्रिटिश सरकार और उसके युद्ध प्रयासों के समर्थन में सामने आए।[५] जयपाल सिंह को प्रांतीय "रिसर्च स्कॉलर, विश्वविद्यालययुद्ध समिति का सदस्य बनाया गया। जैसे-जैसे युद्ध तीव्र हुआ, उन्होंने सेना के सभी हथियारों के लिए सचमुच हजारों और हजारों कुशल और अकुशल आदिवासी लड़ाकों और गैर लड़ाकों की भर्ती का आयोजन किया।[६] विचार यह था कि इस वफादारी को झारखंड के आदिवासियों के लिए पृथक राज्य के पुरस्कार से पुरस्कृत किया जाएगा[७] "जैसा कि जयपाल सिंह अपनी जीवनी में लिखते हैं," १९३९ ई० के युद्ध ने मुझे अपनी ताकत और अनुसरण करने का अवसर दिया। कांग्रेस ने युद्ध प्रयासों का बहिष्कार किया, मैंने उसका थोक समर्थन किया। ७२०० आदिवासी लड़ाकू और गैर-लड़ाकू दलों में शामिल हुए। विदेशों में लड़ना और सेवा करना ज्ञानोदय था जिसने आंदोलन में मदद की। बेशक, मुझे राष्ट्रीय स्वतंत्रता के संघर्ष का देशद्रोही करार दिया गया। इसने मुझे बिल्कुल भी चिंतित नही किया। मैंने पाया कि बिड़ला और टाटा जैसे कांग्रेस के वित्तपोषक युद्ध अनुबंधों का पूरा फायदा उठा रहे हैं"[८]

युद्ध के दौरान, जयपाल सिंह ने प्रमुख कांग्रेस नेता, प्रोफेसर अब्दुल बारी के नेतृत्व में टाटा वर्कर्स यूनियन द्वारा प्रायोजित श्रमिक हड़ताल के खिलाफ आदिवासी, बंगाली और उड़िया मजदूरों को संगठित करने में लेबर फेडरेशन, जमशेदपुर के अध्यक्ष मानेक होमी के साथ हाथ मिलाया। इसके परिणामस्वरूप जमशेदपुर में हड़ताल धीरे-धीरे टूट गई।[९] जब सुभाष चंद्र बोस ३ दिसंबर, १९३९ ई० को ब्रिटिश सरकार के युद्ध प्रयासों के खिलाफ मजदूरों का समर्थन लेने के लिए जमशेदपुर गए, तो जयपाल सिंह ने उन्हें आदिवासियों की ओर से एक भाषण दिया जिसमें छोटानागपुर और संथाल परगना के अलग-अलग गठन की मांग की गई थी। सुभाष चंद्र बोस ने आदिवासियों को कांग्रेस से अलग न रहने की सलाह दी[१०] और छोटानागपुर संथाल परगना प्रांत की मांग को ठुकरा कर जयपाल से को कांग्रेस का समर्थन करने को कहा, [११] तो उन्होंने छोटानागपुर संथाल परगना अलग राज्य की मांग को ठुकरा दिया।[१२] हालांकि, जयपाल सिंह ने सलाह को नजरअंदाज कर दिया और रांची में "छोटानागपुर के लिए एक अलग प्रांत के पक्ष में" एक बैठक की। इस बैठक में, यह अच्छी तरह से जानते हुए कि आदिवासियों की बिगड़ती सामाजिक आर्थिक स्थिति एक सदी से अधिक पुराने ब्रिटिश शासन का परिणाम थी, न कि सीमित शक्तियों के साथ कांग्रेस मंत्रालय के दो साल के शासन का परिणाम, जयपाल सिंह ने कहा कि कांग्रेस सरकार वे अब तक के सबसे बुरे थे[१३] उन्होंने यह विचार व्यक्त किया कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद कांग्रेस साम्राज्यवाद से कहीं अधिक श्रेष्ठ था। सुभाष चंद्र बोस ने १८ दिसंबर १९३९ ई० को रांची में एक सभा को संबोधित किया। वहां उन्होंने आदिवासियों से हजारों की संख्या में कांग्रेस में शामिल होने और स्वतंत्रता संग्राम के लिए तैयार होने की अपील की।[१४] "सनातन आदिवासी महासभा, जुलाई १९३९ ई० में एक गैर-ईसाई आदिवासी नेता थेबल उरांव द्वारा गठित। इसने आदिवासी महासभा के अलगाववादी आंदोलन का विरोध किया क्योंकि इसका उद्देश्य पृथकतावादी आंदोलन को कमजोर करना था।[१५] जहाँ तक द्वितीय विश्व युद्ध का संबंध था, सनातन आदिवासी महासभा का रुख इससे अलग नही था। कांग्रेस की जबकि आदिवासी महासभा ने ब्रिटिश सरकार को अपना अयोग्य समर्थन दिया [१६]

रामगढ़ में मार्च १९४० ई० को कांग्रेस ने भी पृथक प्रांत की मांग की उपेक्षा की लेकिन अधिवेशन से ठीक पहले, जलपाल सिंह ने १४ "से १६" मार्च १९४० ई० तक आयोजित होने वाले आदिवासी महासभा के सत्र के दौरान रांची में आदिवासियों की एक रैली की योजना बनाई। उन्होंने एक अपील की जवाहरलाल नेहरू और राजेंद्र प्रसाद को उनकी रैली का दौरा करने या कांग्रेस सत्र के

दौरान आदिवासी महासभा के एक प्रतिनिधिमंडल को सुनने के लिए, और उन्हें आश्वस्त करने के लिए कि कांग्रेस अलग मान्यता के उनके दावे पर विचार करेगी। जवाब में, जयपाल सिंह से अनुरोध किया गया कि वे आदिवासी मामले का प्रतिनिधित्व करने के लिए रामगढ़ में एक प्रतिनिधिमंडल भेजें, उन्होंने उन्हें कांग्रेस अधिवेशन के दौरान होने वाले समझौता-विरोधी सम्मेलन में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया, इस विकास से आहत होकर, जयपाल सिंह ने अपनी योजना के साथ जाने का फैसला किया निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार रांची में आदिवासी रैली आयोजित करना।''[१७] आदिवासी महासभा ने भी युद्ध के प्रयासों के लिए अपना समर्थन दोहराया।

आदिवासी महासभा का वार्षिक अधिवेशन १४'' से १६'' मार्च तक जयपाल सिंह की अध्यक्षता में हुआ। अपना अध्यक्षीय भाषण देने से पहले, जयपाल सिंह ने सिंहासन के प्रति वफादारी का एक प्रस्ताव पेश किया। उन्होंने छोटानागपुर और संथाल परगना के आदिवासियों से उनकी एकता और एकजुटता की अपील की और आदिवासियों के उत्थान में उनके योगदान के लिए ईसाई मिशनरियों की सराहना किए। एक प्रस्ताव में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से अनुरोध भी किया गया था कि वह एक आदिवासी प्रांत के निर्माण के लिए कदम उठाए और बिहार कांग्रेस मंत्रालय के कदाचार की जांच करे, जिसने पहले ही इस्तीफा दे दिया था।[१८]

आदिवासी महासभा ने स्वतंत्र रूप से आदिवासी विद्रोही नेता बिरसा मुंडा के नाम का इस्तेमाल आदिवासी पुनरुत्थान के प्रतीक के रूप में किया। ईसाई आदिवासियों ने बिरसा मुंडा के नाम के प्रयोग के विरोध में आदिवासी महासभा से अलग होने की धमकी भी दी।[१९] स्थानीय प्रशासन ने भी जयपाल सिंह को बिरसा के नाम का उपयोग करने में सावधानी बरतने की चेतावनी दी, अन्यथा इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा''[२०] हालांकि, जयपाल सिंह ने बिरसा के पुनरुद्धार को उचित ठहराया और कहा कि बिरसा मुंडा को भारतीय इतिहास में जगह मिलेगी।''[२१] झारखंड में कांग्रेस, जिसने गैर-ईसाई आदिवासियों और पिछड़े समुदायों के बीच एक आधार विकसित किया था, ने बिरसा को ब्रिटिश विरोधी बताया। इसने आदिवासी महासभा के खिलाफ अपने अभियान में ईसाई विरोधी पहलू निभाया और उस पर वफादार होने का आरोप लगाया। १९४० ई० में कांग्रेस और फॉरवर्ड ब्लॉक द्वारा बिरसा दिवस मनाया गया। रामगढ़ कांग्रेस के मुख्य द्वार का नाम बिरसा के नाम पर रखा गया था और उनके जीवन की कहानियां स्मारिका में लिखी और प्रकाशित की गई थी।''[२२] सुभाष बाबू की सलाह पर जयपाल सिंह ने रामगढ़ अधिवेशन में झारखंड राज्य की चर्चा नहीं की।[२३]

युद्ध की अवधि के दौरान, आदिवासी महासभा मुस्लिम लीग के करीब आ गई, विशेष रूप से १९४० ई० में लाहौर में लीग द्वारा औपचारिक रूप से ''अलग पाकिस्तान'' प्रस्ताव को अपनाने के बाद। मुस्लिम लीग ने एक स्वतंत्र आदिवासी बनाने के बारे में सोचा जो १२०० मील का निर्माण करेगा।[२४] प्रस्तावित पाकिस्तान के पूर्व और पश्चिम विंग के बीच लंबा गलियारा'' लीग के पास कोई वास्तविक नहीं था आदिवासी महासभा की मदद करने में रुचिय इसके अपने उल्टे डिजाइन थे। यह बताया गया था कि मुस्लिम लीग ने आदिवासी महासभा को आदिवासियों के प्रचार कार्य के लिए एक लाख रुपये की राशि का दान दिया था ।[२५] छोटानागपुर के ईसाई मिशनरी पत्रों में प्रकाशित कुछ लेख जैसे ''निष्कलंका'', ''आदिवासी'' और झारखंड शायद ही अलग थे। पाकिस्तान की वकालत करने वाले मुस्लिम पत्रों में लेखन भी किए।[२६]

जयपाल सिंह ने १९४१ ई० में झारखंड में श्रमिक कंपनियों और सैन्य इकाइयों की भर्ती के समर्थन में कई सभाओं को संबोधित किया।[२७] आदिवासी महासभा के एक समाचार पत्र आदिवासी सकाम ने जुलाई १९४० ई० में अपनी पहली शुरुआत की, जिसमें जयपाल सिंह ने युद्ध में सरकार को पूर्ण समर्थन की वकालत की। उनका कांग्रेस विरोधी भी उन्हें मुस्लिम लीग के करीब ले आया।''[२८] यह उनकी बड़ी भूले थी जिसके बाद में उन्होंने

परिमार्जन भी किया आदिवासी महासभा ने ३१ अक्टूबर १९४० ई० को बिहार मंत्रिमंडल द्वारा दिए गए सामूहिक इस्तीफा पर खुशी व्यक्त किया और मुक्ति दिवस मनाया।[२९] जयपाल सिंह ने ब्रिटिश युद्ध के प्रयासों को भी हर संभव मदद प्रदान की और चौनपुर और उसके आसपास ताना-भगतों की गतिविधियों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करके सरकार के एजेंट के रूप में काम किया। उन्होंने ताना-भगतों के खिलाफ एक तरह के रक्षा दल के रूप में अपने स्वयं के लोगों को संगठित करने का वादा किया।[३०] जयपाल सिंह की इन गतिविधियों ने उनके और कांग्रेस और अन्य राष्ट्रवादी तत्वों के बीच एक व्यापक खाई पैदा कर दी।

इस प्रकार, यह देखा जा सकता है कि झारखंड और संथाल परगना क्षेत्रों के निवासियों को उचित प्रतिनिधित्व और लाभ सुनिश्चित करने के सामान्य एजेंडे के साथ, जयपाल सिंह का द्वितीय विश्व युद्ध में झारखंडियों की भूमिका के प्रति मौलिक रूप से अलग दृष्टिकोण था। यह और बात है कि उस युग की अन्य राजनीतिक ताकतों ने उनके दृष्टिकोण को साझा नहीं किया और द्वितीय विश्व युद्ध के अशांत समय के दौरान जयपाल सिंह द्वारा इतने साहसपूर्वक उठाए गए मार्ग से भिन्न थे। आज दृष्टि के लाभ से यह कहा जा सकता है कि जयपाल सिंह के पास द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अपने कार्यों का एक कारण था, वे कारण जो अंततः इस क्षेत्र के निवासियों के लिए फायदेमंद होने के लिए तैयार किए गए थे। कुछ लोग इस बात से असहमत होंगे कि हालांकि उनका दांव अलग था, लेकिन उनका अंतिम उद्देश्य अपने भाइयों की मुक्ति का ही रहा।

संदर्भ

१.शैलेंद्र महतो, "झारखंड के समरगाथा", दानिश बुक, दिल्ली, २०१५, पृ० -१६७

२.गृह विभाग की राजनीतिक कार्यवाही (पीपीएचडी), १८/७/३९/-१९३९ (एनएआई)।

३. केके दत्ता, बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन, खंड - ।।, बिहार सरकार, पटना, १९५७, पृष्ठ- ३४१।

४. संजय कुमार, आदिवासी महासभा (१९३८-१९५०) और झारखंड राज्य का उसका सपना, सामाजिक विज्ञान जांच, वॉल्यूम-। , १५, नंबर १-२, समर जोशी आदिकारी इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल स्टडीज इन एसोसिएशन विद मानक पब्लिकेशंस प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, २००३, पृष्ठ- ९)

५. पीपीएचडी १८/११/३९ (एन ए आइ)

६. एल एन राणा, छोटानागपुर में पार्टी की राजनीति, १९३७-१९८७, पीएच.डी. थीसिस, रांची विश्वविद्यालय, १९९१ (एमएस), पीपी।

७. यूएस रेखी, झारखंड मूवमेंट इन बिहार, नून्स पब्लिशर्स, नई दिल्ली, १९८८, . पृष्ठ -१४३.

८. रश्मि कात्यायन (सं.), लो बीर सेंद्रः एन ऑटोबायोग्राफी ऑफ मारंग गोमके जयपाल सिंह, प्रभात खबर प्रकाशन, २००४, पीपी। १०३-१०४

९. एल एन राणा, ऑप सीआईटी, पृष्ठ -१३०-१

१०. होम पोल, फाइल नं. १८/१२/३९-१९३९ (एनएआई)

११. बलबीर दत्त, "कहानी झारखंड आंदोलन के इतिहास से साक्षात्कार", क्राउन पब्लिकेशन,राँची, २००५, पृ०- ३८२

१२. अनुज कुमार सिन्हा, "झारखंड आंदोलन का दस्तावेज, शोषण संघर्ष और शहादत", प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ,२०१३, पृ० ३२

१३. द सर्चलाइट, ५ दिसंबर, १९३९

१४. उक्त, २१ दिसंबर, १९३९

१५. बलबीर दत्त, "कहानी झारखंड आंदोलन के इतिहास से साक्षात्कार", पूर्वोक्त, पृ०- ३८२।

१६. होम पोल। कोई फाइल नहीं। १८/११/३९ (एनएआई)

१७. होम पोल।, फाइल नं। १८/३/४०-१९४० (एनएआई)।

१८.वही ।

१९. नेस्टर, सम आदिवासी हीरोज', बिहार हेराल्ड, खंड- ।। संख्या ३६, ११ जून, १९४०।
२०. एसपी, रांची की गोपनीय रिपोर्ट डीआईजी, सीआईडी, सी.आई.ओ. बिहार, पटना, मेमो नंबर १०९१, २९ मार्च, १९४० य बिरसा भगवान पंथ, एफएन २८/४०, छोटानागपुर आदिवासी आंदोलन, बिहार सरकार, बिहार राज्य अभिलेखागार, पटना।
२१. जयपाल सिंह, बिरसा मुंडा की जय या क्षै, बिहार हेराल्ड, खंड २३, १९४०।
२२. गोपनीय रिपोर्ट, एसपी रांची, ऑप। सीआईटी
२३. अनुज कुमार सिन्हा, ''झारखंड आंदोलन का दस्तावेज, शोषण संघर्ष और शहादत'',
प्रभात प्रकाशन, दिल्ली ,२०१३, पृ० ३२
२४. आर.एस. शुक्ल से सरदार वी.पटेल, २० जनवरी, १९४८य पत्र संख्या ४३५, दुर्गा दास (एड) पटेल पत्राचार, वॉल्यूम।, अहमदाबाद, १९७३, पृष्ठ -.५२५ य साथ ही के.एस. सिंह ट्राइब्स, पार्टीशन एंड इंडिपेंडेंस' एस. सेटर और इंदिरा बी. गुप्ता (संस्करण) में। विभाजन की पीड़ा, वॉल्यूम। १, मनोहर पब., नई दिल्ली, २००२, पृ०- .२६६-६७,
२५. एम.एस. नियोगी, ईसाई मिशनरी गतिविधियों पर जांच समिति की रिपोर्ट, मध्य प्रदेश, १९५७, पृ०- ९.
२६. पूर्वोक्त पृ०- ७.
२७. गृह पुलिस प्रोग। ७५/५/४२-१९४२ (एनएआई)।
२८. एलएन राणा, अगस्त क्रांति की पूर्व संध्या पर झारखंड में राजनीति, १९४२, कार्यवाही भारतीय इतिहास कांग्रेस का, ६४ सत्र, २००३, पृ०- १०००।
२९.शत्रुध्न कुमार पांडेय, झारखंड का इतिहास, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन ,नई
दिल्ली, २०१८, पृ०- २६५
३०. होम पोल, फाइल नं ६९/४३, छोटानागपुर में गांधी का उपवास और आधिकारिक चिंता।